आवाज़
Student Media Body Of IIT Kharagpur
www.awaaziitkgp.in
April 2025

Placement Analysis 1

This year, the placement season unfolded on a note similar to the last. The first phase of Placement was completed in December. In the first phase of Placement, more than 1400 offers (including PPOs) were received from 290+ companies, and more than 1000 offers were made within just 3 days. CS students received the highest number of offers (186), followed by EC(177) and ME(145) students, catering to the increasing demand in the technical domain. Dual degree students secured maximum offers(492), while BTech(422) and MTech(250) students also received significant opportunities from the recruiters. IT/Software takes the lead as the major recruiting sector for companies.

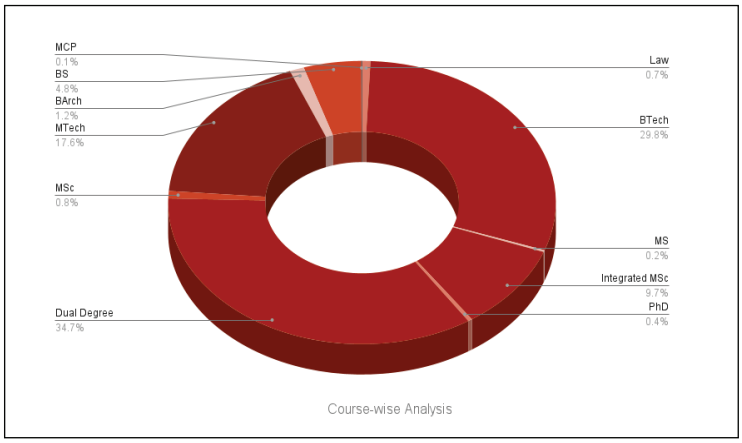

Course-wise Analysis

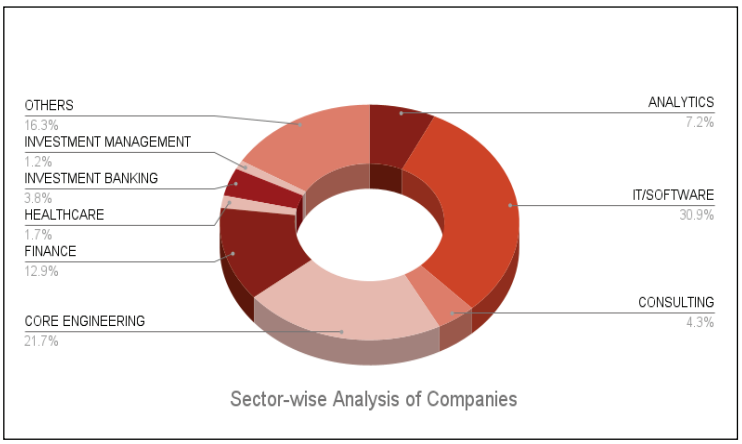

Sector-wise Analysis of Companies

Students also received reasonable offers in the Core Engineering, Finance, Consulting, Healthcare, and Analytics sectors. Some of the top recruiters were Microsoft, Axtria, American Express, and Texas Instruments. In addition to top MNCs and private companies, several startups also participated in the placement drive, offering diverse career opportunities to students. Overall, 69% of registered undergraduate students and 51% of all registered students secured job offers in Placement Phase 1.

All the above-mentioned data is subject to error.

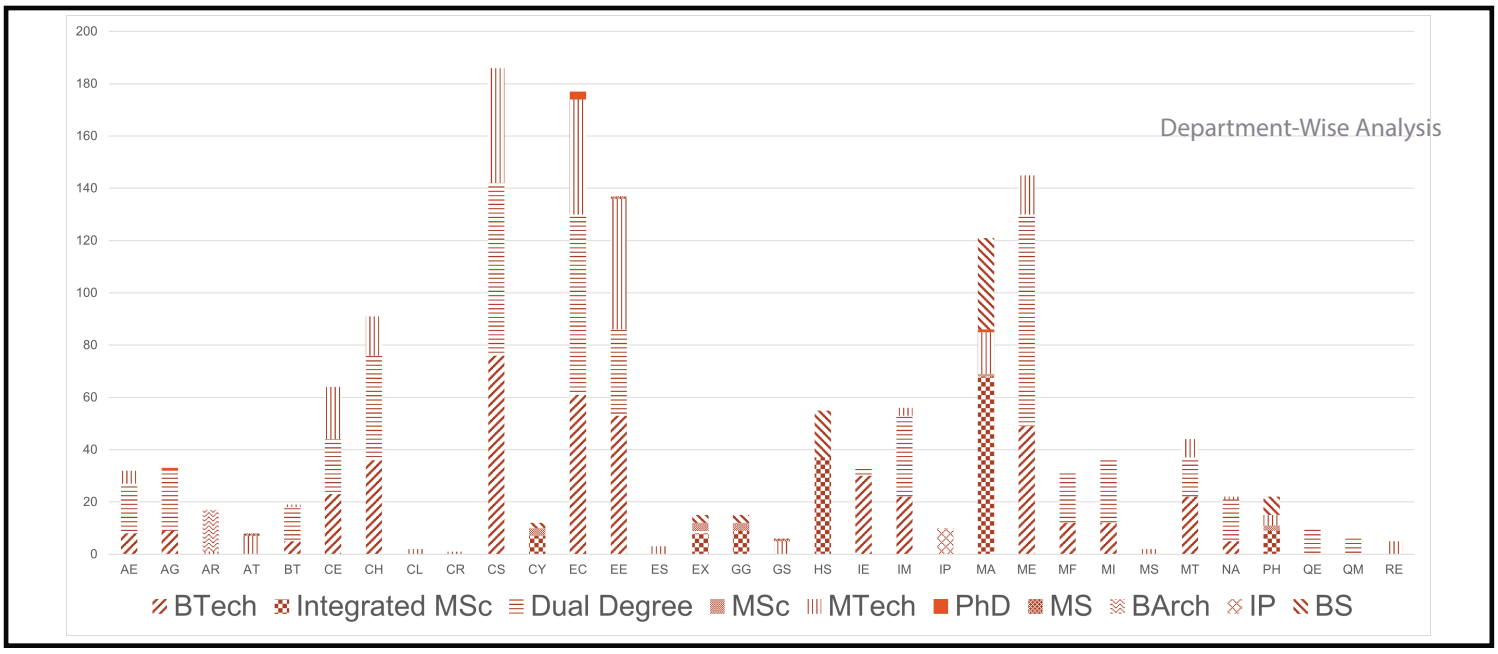

INTERNSHIP

ANALYSIS

An internship can transform a student's professional journey, providing invaluable industry exposure and skill development opportunities that shape their career.

The CDC Internship drive started in July and is currently in Phase 2. Phase 1 ended with over 700 offers from 120+ companies across various programs.

Regarding academic programs, Dual degree students emerged as frontrunners, securing 316 offers, followed by Btech students with 290 offers and BS students with 59 offers in the first phase.

The offers were split across three significant sectors: IT/Software dominated, followed by Core Engineering and Finance.

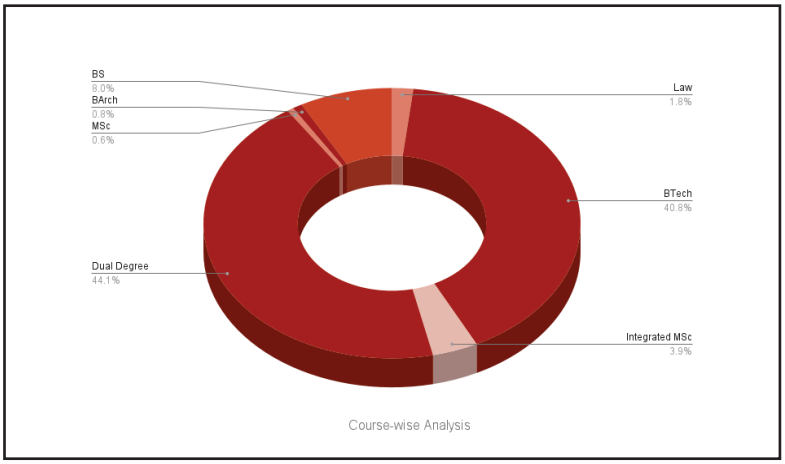

Course-wise Analysis

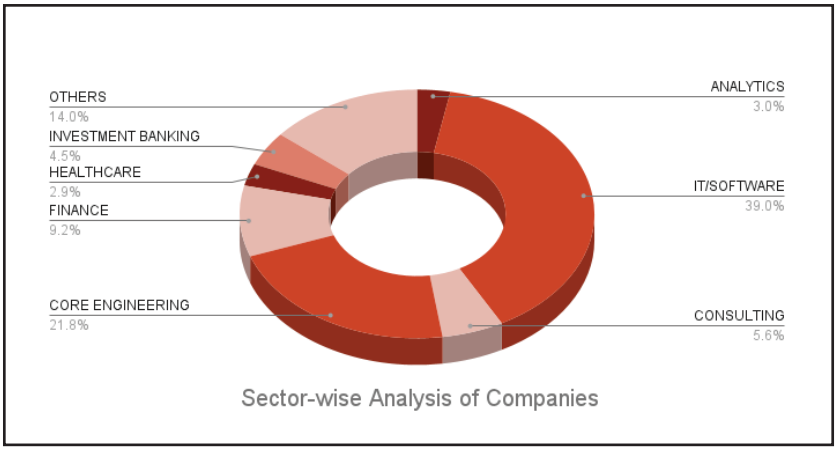

Sector-wise Analysis of Companies

Moving on to the branches, Computer Science students received the highest offers (141), followed by Electronics and Electrical Communication, securing 112 offers, and Electrical Engineering, with 69 offers in the first phase. Industry giants like Samsung, Google, Texas Instruments and Amazon were the top recruiters.

While securing an internship is a significant milestone, it's important to remember that "success is a journey". Countless opportunities lie ahead, and one should remain open to exploring them.

All the above-mentioned data is subject to error.

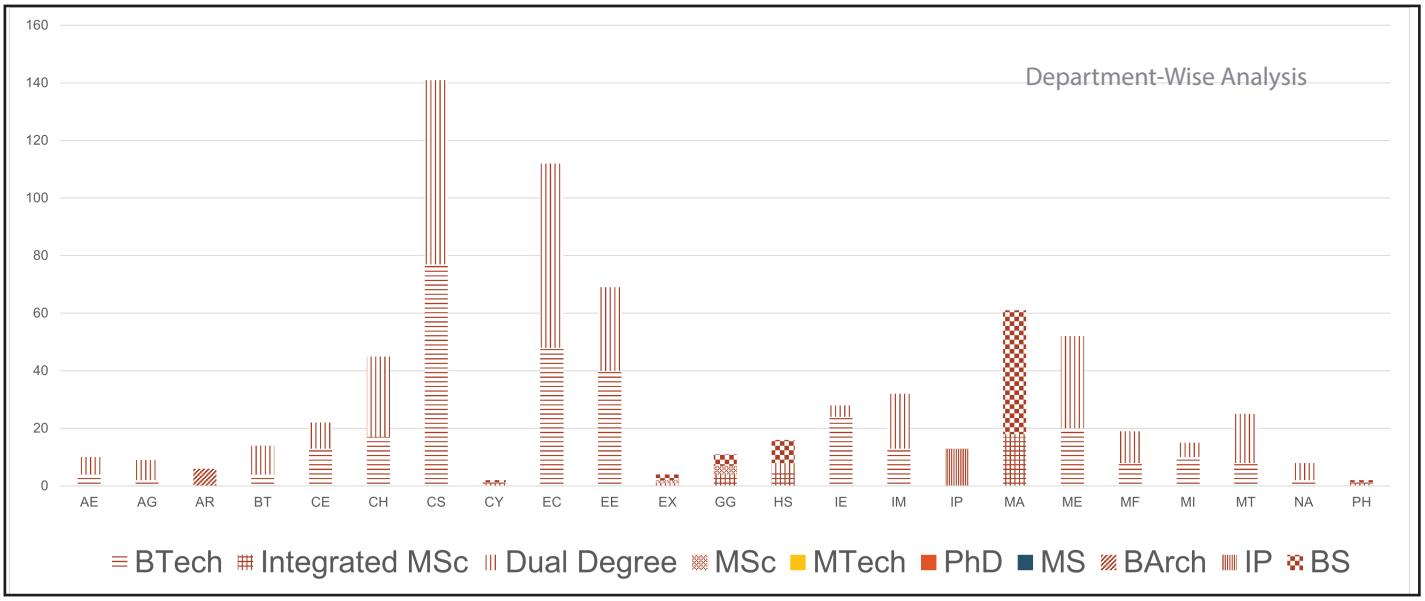

Amigos Restaurant, Sahara
Spicy Darbar , IIT Kharagpur
www.SpicyDarbar.com 8309974758
DISCOUNT VOUCHER
Attention Customers : Our Full Biryani Menu is Only Available on Spicydarbar.com and not in Swiggy and Zomato .
Coupon Code: AAWAAZ@AMIGOS2025
Discount
20%
Offer valid Only for Dine in & Delivery @ Amigos -Sahara IIT kharagpur
Physical Copy must be produced to claim offer
Mixmum Discount of 200 Per Order on MOV of Rs.349
Valid limit : 25/05/2025 visit us soon ...

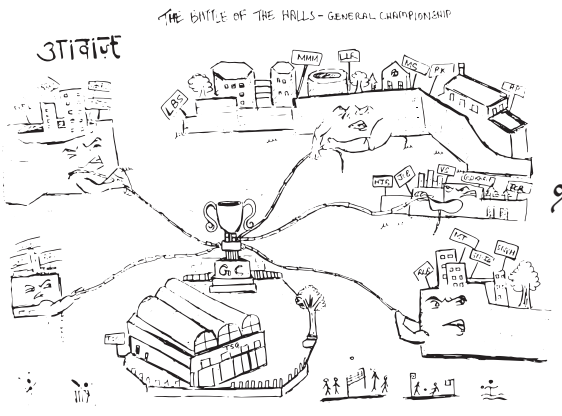

भाट

मोबाइल की नजरों से "IIT"

इतिहासकारों ने पहिए को मानवता के लिए सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार माना है। पर मैं इससे असहमत हूँ। और आशा है मेरी पूरी बात सुनने के बाद आप भी हो।

मैं मोबाईल को सबसे ऊपर रखूंगा। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में पढ़ने वाले छात्र के लिए नए तकनीक के प्रति झुकाव होना सहज है। पर अब लोगों को एस.न.वी.एच के आगे घंटों खड़े होने की जरूरत नहीं है बस एक फोन लगाकर सीधा मामला तय कर लो। मेरी दलील को निकृष्ट मानने वाले लोगों के लिए मैं जोड़ो के महत्व पर प्रकाश डालना चाहूंगा। भीष्म पितामह की विवाहित होते तो महाभारत नहीं होता और यहां जोड़े न होते तो सेन्ट्रल लाइब्रेरी में रोजाना कई स्टार्टअप इंडिया नहीं बनते।

केवल इसी प्रयोग को प्रसांगिक मानते हुए कुछ लोग टेलीफोन को भी दावेदार मान सकते है। जिसपर उन्हें IIT खड़गपुर में 'टी' से नाम शुरू करने वाली परंपरा का भी सहयोग भी मिलेगा। पर इससे भ्रम उत्पन्न हो सकता है जैसे लोग नेहरू हॉल को जवाहर लाल नेहरू के नाम पर समझ लेते है। इसी एकरूपता का चश्मा पहने कुछ लोगो को रोहिंग्या शरणार्थी और आम भारतीयो में फर्क नहीं जान पड़ता ।

इससे इतर कई और तर्क मोबाइल को टेलीफोन से अच्छा सिद्ध कर सकते है। मोबाईल टेलीफोने से ज्यादा निजी होता है। दहेज में साईकल से लेकर फ्रीज, टीवी तक सब मांग लेने वाले समाज में दहेज में मोबाइल मांगना आज तक नहीं सुना। निजता की दुहाई देते लोग एच.एम.सी मे सिंगल रूम की मांग करते मिल ही जाते हैं।

टेलीफोन में सोशल मीडिया तो छोड़िए जिमखाना, सोसाइटी और प्रोफेसर्स की पसंदीदा मेल भी नहीं है। मेल की पवित्रता का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है की जोड़ो मे अनबन होने पर वाट्सऐप, इंस्टाग्राम की चैट देखी जाती है पर मेल को कोई हाथ नहीं लगाता। मेल की उपयोगिता यहीं समाप्त नहीं होती। जिमखाना से लगातार मिल रहे मेलों से कई सारे इंटर्नशिप करने के बाद मेरे एक मित्र ने उसे अनसब्सक्राइब कर दीया।

पर फिर भी कहना चाहूंगा कि कुछ मामलों में मोबाइल न हो तब भी कम चल सकता है। मेरे आस-पास कई ऐसे उदाहरण है जो मोबाइल की सहायता से पूरे समाज का कल्याण कर रहे है। ऐसे ही है हमारे एक पड़ोसी जो सुबह 6 बजे का अलार्म लगा कर रखते है। और बड़े ही निर्ममता से तीन- चार बार स्नूज़ करके तब बंद कर देते है जब पड़ोस की जनता जग चुकी होती है। अपना कर्तव्य पुरा होने के बाद वे खुशी से सो जाते है। ऐसे लोगो पुस्कृत करना चाहिए ताकि ई.सी. की क्लास की अटेंडेंट्स शत् प्रतिशत हो जाए।

कहते है खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। देखिए न आधे कटे हुए सेब की छपाई वाले फोन बेहतर माने जाते है। जहाँ दो-तीन सेब दिखे बाकी अपने आप छुप जाते है। अंबेडकर जी जिस व्यवस्था को समाप्त करना चाहते है ये वो आज वस्तुओं को भी संक्रमित कर रही है।

मेरे एक मित्र नालंदा के सामने साइकिल से गिर गए। नैतिक शिक्षा के किताब में पढ़े अध्याय "सेवा परमो धर्मः" को चरितार्थ करते हुए उन्होंने उसी अवस्था में जेब से मोबाइल निकाल अच्छे से जांच कर संतोष हो जाने पर ही अपने चोटों पर गैर किया। इन्हीं लोगों से गांधी जी के न होने का अहसास नहीं होता। मेरे समझ से सभी मेस इंचार्जस को मोबाइल बांट देने से बिना मेस बजट बढ़ाए ही पनीर की तबियत सही की जा सकती है।

IIT की कहानी, कुत्तों की ज़ुबानी

अगर IIT खड़गपुर को एक किंगडम माना जाए, तो राजा न डायरेक्टर हैं, न प्रोफेसर, और न ही मेस वाले अंकल। असली हुकूमत तो यहाँ के कुत्तों की है! यहाँ की पूरी सत्ता इन प्यारे जीवों के हाथ—माफ कीजिए, पंजों में है। अगर आपको लगता है की आपकी अटेंडेंस कम हो गई है, तो आपको इनसे सीखने की ज़रूरत है। सुबह 8 बजे जब आप अपने जीवन के निर्णयों पर पछता रहे होते हैं, तब ये सबसे आगे वाली सीट पर बैठकर प्रोफेसर को इस नज़र से देखते हैं जैसे इनका पीएचडी वाइवा चल रहा हो।

मेस में इनका अलग ही रुतबा है। जैसे ही आप खाना लेकर बैठते हैं, ये आपके बगल में आकर बैठ जाते हैं और ऐसी नज़रों से देखते हैं कि आपको अपने जीवन के सारे पाप याद आ जाते हैं।आपको ऐसी इमोशनल ब्लैकमेलिंग वाली नज़र से देखेंगे की आपको अपना सारा बचपन याद आ जाता है—"क्या मैं इतना मतलबी हो गया कि इस बेज़ुबान को रोटी न दूँ?" और अगर आप इनकी इस कला से प्रभावित न हुए, तो ये प्लान - बी पर चले जाते हैं—दो पैरों पर खड़े होकर, कान झुका कर, टेढ़ी गर्दन करके, "देखो, मैं कितना क्यूट हूँ" वाला पोज़ से आपको फंसा लेते हैं।

अगर किसी को लगता है कि वो नालंदा के लॉन में चुपचाप अपने क्रश के साथ बैठकर सूरज ढलते हुए देख पाएगा, तो भाईसाहब, आप गलत सोच रहे हैं ! क्योंकि जैसे ही आप बैठे नहीं कि अगले ही पल 5-6 कुत्तों की फौज आप पर हमला बोल देती है यह सोचते हुए की:

"अरे! , दो विपरीत जेंडर के छात्र साथ में बैठे हैं!"
"टीम, चारों तरफ से घेर लो!"

बस फिर क्या, अगले ही पल ऐसा सीन बन जाता है की अब लड़का और लड़की athlete बन चुके होते हैं—लड़का एक तरफ भागता है, लड़की दूसरी तरफ, और कुत्ते पीछे से मिशन इंपॉसिबल का थीम म्यूजिक बजाते हुए उनका पीछा कर रहे होते हैं।सच कहूँ तो ये प्राणी IIT खड़गपुर के असली मालिक हैं।हम स्टूडेंट्स? बस 4-5 साल के टेम्परेरी निवासी

अगर आपको लगता है की हॉस्टल का बाथरूम आपकी पर्सनल स्पेस है,तो आप इन्हें कम आंक रहे हैं।आप बड़े इत्मीनान से नहाने जा रहे हैं, बाल्टी रखी...और जैसे ही शॉवर चालू किया—दरवाजे के नीचे से दो कुत्तों की चमकती हुई आँखें दिखेंगी! और अब आपको अपने स्नानगृह में भी सीसीटीवी सर्विलांस की अनुभूति होने लगेगी !आखिर हमारे संस्थान के यह जीव हर जगह आपकी रखवाली के लिए ही तो हैं! अगर कभी इन्के अलग-अलग समहू का मीटअप हो जाए तो फिर शुरू होती है गैंगवॉर! जो भी पराजित, उसकी अवस्था वैसी ही प्रतीत होती है जैसे छात्रों को इंटर्नशिप में अस्वीकृति के बाद!

हर नया छात्र जब IIT में आता है, तो पहले कुछ हफ़्तों में उसे समझ में आ जाता है कि पढ़ाई से ज्यादा ज़रूरी है इन जीवों से तालमेल बिठाना। पहले दिन ये सिर्फ़ आपका आंकलन करेंगे और फिर दूसरे दिन आपको घेर कर आपकी हिम्मत और दृढ़ता की पराकाष्ठा ज्ञात करेंगे तत्पश्चात निर्णय होगा की आपके और इनके बीच अटूट मित्रता होने वाली है या द्वंद्व होने वाला है।अगर आपने इन सभी समस्याओं का सामना नहीं किया,तो या तो आपने आईआईटी की रोमांचक ज़िन्दगी को सही से जिया ही नहीं ।

KNOW YOUR ENTREPRENEUR

Pradip Fatehpuria
Co-Founder - Trumio Inc.

Beginning with modest origins yet filled with dreams, Pradip Fatehpuria embarked on his journey at IIT Kharagpur's CSE Department, residing at RP Hall. After graduating in 1988, he ventured into Kolkata's startup ecosystem before securing a role at Microsoft, dedicating over two decades to the evolution of technology.

His memories of IIT Kharagpur remain vivid, recalling the vibrant cultural scene centered around GC, Illu, and inter-hall activities. He emphasized that hostel life and friendships remained timeless. He noted the immense importance of GC, particularly for RP Hall, which viewed it as a truly momentous occasion. IIT Kharagpur instilled in him a competitive spirit that continues to drive him today.

During his time in Kolkata, he discovered that seniors from RK and RP Hall had launched startups focusing on desktop productivity software—an innovative concept in India at the time. His IIT background helped him secure opportunities, including an on-the-spot job offer when he approached one such startup.

With economic liberalization in the 1990s, technology adoption in India accelerated. While working at Atari in the U.S., he faced challenges such as limited access to tech resources. Liberalization introduced open markets and regulatory changes, particularly under Narasimha Rao's leadership, setting the stage for India's tech boom.

In 1991, a third-party head at Atari sought to acquire marketing rights, leading to his role there. Later, he worked at a product company distributing software globally before joining a startup at the peak of the internet boom. Microsoft had acquired WebTV, and leveraging his network, he secured a role at Microsoft, where he contributed for nearly two decades.

At Microsoft, he played a pivotal role in integrating new technologies, particularly in bridging traditional television with modern digital experiences. His team developed set-top boxes that simplified internet access, demonstrating how technology requires constant adaptation.

He affirmed India's potential to develop indigenous software, highlighting Trumio, an AI-powered platform connecting academia and industry, allowing students worldwide to collaborate in real-time. AI's role in large-scale innovation has grown, but he also stressed the need for ethical governance.

Upon returning to IIT Kharagpur after 12 years, he found its spirit unchanged. He admired students' dedication to Inter-IIT competitions and emphasized the value of clubs and societies in fostering curiosity and growth. His advice to students: explore new territories, embrace change, and develop a growth mindset to navigate the evolving technological landscape.

HUMANS OF KGP

4

स्कूल - कॉलेज विद्या के मंदिर होते है। अगर आईआईटी खड़गपुर मंदिर है, पढ़ाई पूजा तो स्टेशनरी शॉप वो सामग्रीदाता जिससे पूजा सम्पन्न हो सके। आईआईटी खड़गपुर में स्टेशनरी शॉप का न होना बिल्कुल वैसा ही है जैसे आकाश में सूर्य का न होना।

' ठैकर्स शॉप ' इसी ज्ञान की आग को जलाए रखने के लिए वर्षों से आहुति देने वाले की भूमिका निभाए हुए है। Tech-M के भीतर ये दुकान साल 1967 से निरंतर सेवा में है और यहां की सबसे पुरानी दुकानों में से एक है। उन्होंने बताया कि उनकी दुकान पहले टाऊन में थी, 1967 में वो Tech-M में आ गए।

'Enjoy The Life' की सोच में विश्वास रखने वाले दादा की लोकप्रियता विद्यार्थी से लेकर प्रोफेसर तक समान रूप से है। प्रोफेसर, डायरेक्टर जब भी Tech-M आते है तो उनसे हाय - हैलो करके ही जाते है। दिल्ली - बॉम्बे में आईआईटी खड़गपुर में पढ़ें - पढ़ाए लोग उन्हें मिल ही जाते है। आईआईटी में अच्छे - बुरे मोमेंट पर दादा ने ग्राहक के खुशी में अपनी खुशी की बात कही और आज तक किसी से विवाद न होने पर संतोष जाहिर किया।

पर्यटकों को दादा आईआईटी के प्रतीक वाले मोमेंटो उपहार के रूप में देते है। जब भी कोई एलम, विदेशी आगंतुक या पुराने प्रोफेसर वहां आते है तो उन्हें ये याद के रूप में दिया जाता है। यही आत्मीयता कारण है कि आईआईटी तो छोड़ो विदेशी पर्यटक, प्रोफेसर भी मिलने और हालचाल लेने ठैकर्स शॉप पहुंच ही जाते है।

"परिवर्तनमेव स्थिरम् अस्ति" परिवर्तन ही स्थिर है, तो परिवर्तन ठैकर्स शॉप में भी हुआ। वेंडर सिस्टम आने से पहले जो डिपार्टमेंट जो ऑर्डर आते थे अब नहीं आते। डिजिटल होते समय में किताबों की मांग भी कम हुई। आईआईटी की शुरुआती दिनों से अब तक बच्चों की संख्या भी बढ़ गई है तो बहुत ज्यादा बदलाव नहीं जान पड़ता। परिवर्तन और COVID-19 का तो चोली - दामन का संबंध रहा है। कोविड के समय लगातार दो साल तक दुकान बंद रही।

इस आईआईटी परिवार के वरिष्ठ होने के नाते उन्होंने छात्रों को खूब सराहा और उन्हें भविष्य के लिए संदेश दिया। आईआईटी को ब्रांड नेम बोलते हुए दादा कहते है कि ये बच्चों के लिए सम्मान और गर्व की बात है। सामाजिक दायित्व समझते हुए दादा ने माता - पिता का हमेशा साथ देने और उनका सम्मान करने का कहा। पढ़ाई के साथ Enjoy The Life पर भी जोर दिया।

OFFBEAT
CAREERS

Sandipan Deb: An Insightful Journey from IIT to Journalism

Few people make the leap from engineering to journalism, but Sandipan Deb is one of those rare individuals who followed his passion despite the risks. An alumnus of IIT Kharagpur, he carved out a career in storytelling, moving from corporate marketing to the newsroom. We had the opportunity to speak with him about his journey, his thoughts on journalism today, and his advice for aspiring writers.

Reflecting on his IIT days, Sandipan recalled how deeply he was involved in extracurricular activities, from being the Literary and Socult Secretaries at RK Hall to leading his hall as Hall President. "More than the academics, it was the people I met and the friendships I built that had a lasting impact," he shared. Even decades later, he remains close to his IIT friends, a bond he considers one of the most valuable takeaways from his time here.

After graduation, he took up a job in marketing at ITC, where he managed significant portfolios. Though he was excelling in his role, a lingering desire to write pushed him to take an unconventional leap. "It was a tough decision," he admitted. "I was leaving behind stability, taking a huge pay cut, and moving from Kolkata to Delhi for a small magazine group.

Sandipan's journey as a writer led him to author several books, including 'The IITians: The Story of a Remarkable Indian Institution and How its Alumni Are Reshaping the World'. Initially hesitant about the project, he was persuaded by his wife to take it up, and the book resonated strongly with IIT graduates.

More recently, he translated Abanindranath Tagore's 'Raj Kahini' into 'Suryavamshi - The Sun Kings of Rajasthan', a project he deeply cherishes.

For students who are also aspiring journalists, his advice is straightforward: "If you're in it for money, journalism may not be the best career choice. But if you're passionate about writing and understanding the world, it can be incredibly fulfilling.

The move to journalism was both exciting and demanding. "There was a thrill in seeing a blank page transform into a published story, but the job wasn't easy. Long, unconventional hours and tight deadlines were part of the package," he said. He also witnessed journalism evolve firsthand, from an era without digital tools to one dominated by social media and AI. While he acknowledges that technology has made news more accessible, he warns about the dangers of misinformation. "The biggest challenge today is the echo chamber effect—people consume news that reinforces their beliefs, rarely questioning its authenticity," he noted.

When asked about the future of journalism, he had a pragmatic view. "AI will undoubtedly replace some editorial roles, but the bigger threat is to programming jobs. AI is great at logic-based tasks, and entry-level coding jobs might become obsolete sooner than we think," he said. However, he remains optimistic about the core concepts of journalism—storytelling and analysis — believing that the human touch will always play a significant role.

Sandipan Deb's journey is a testament to the power of following one's passion despite uncertainties. His story serves as an inspiration for those willing to take risks and carve their own unique paths.

INTER
IIT 2K24

The grand event of the year, when IITians (and students from new IITs) swap late-night coding and campus adda for fierce competition. The same students who rival each other in the GCs and illu (generally won by 2-3 specific halls having starting letters R and A) now stand together, chasing the glory of championship cups.

In all 3 Inter-IIT Meets–Tech, Cultural, and Sports–our contingents, led by our top talents, fought hard across all events, bringing home victories and unforgettable memories.

Let's begin with the Sports Meet. IIT Kharagpur tied with IIT Delhi for bronze, as the competition was not for the bigger campus size but for sports. Led by Marwan Kuzhimpattil at IIT Indore and Mayank Joshi at IIT Kanpur, our team won gold in Athletics (Men), silver in Football (Men), and bronze in Chess. The show stealers? Girls. Golds in Badminton, Athletics, and Swimming, and also shattering Inter-IIT records for 4×100m and 4×400m relays, and many (literally!!) Aquatics events (so many we require a separate column in the Newsletter to mention all). Getting a bronze after two consecutive silvers is still a commendable achievement with great potential to achieve even better results in the future, with improvements where we lack this time. In short, "Gold chahiye next year".

Coming to the Tech Meet. There's not much to say. 4 years, 4 golds, and this time with a tremendous margin of 1246 points (14 IITs didn't even reach this mark). Led by Captain Thoravi Pise, the team just casually brought the cup home again.

Finally, the Cultural Meet (the overall results are not out* by the time this great piece of information is written). Among the released results of individual events, our contingent has already won Gold in the Digital and Theatre Arts, Silver in the Comedy and Quiz Cups, and bronze in Speaking Arts. Overall, 2 podiums(with one awaited result) in 3 Meets seems a fair deal. As the legend goes, "All IITs walk into a cafè. Everyone goes, "Where is my cup?" The answer? "KGP took them all!"

संपादकीय

प्रिय पाठकों, नमस्कार!

जिमखाना इलेक्शंस के परिणामों की हलचल और हॉल डेज़ की ऊर्जा के पश्चात् आवाज़ प्रस्तुत करता है आप सभी का प्रिय समाचार पत्र । नया साल और नया सेमेस्टर ज़रूर है, लेकिन समस्याएँ वही पुरानी – वही प्लेसमेंट, वही CG और वही gender ratio! शैक्षणिक मोर्चे पर बड़ा बदलाव हुआ है। ड्यूल डिग्री कोर्सेज़ में दाखिले को निलंबित कर दिया गया है। इसके साथ ही, संस्थान में DepC की प्रक्रिया को भी समाप्त कर दिया गया है, जिससे नए छात्रों के लिए शाखा बदलने का विकल्प अब उपलब्ध नहीं रहेगा। यह बदलाव छात्रों के करियर की संभावनाओं पर बड़ा प्रभाव डाल सकता है और इसके दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। छात्रावासों में लगातार बढ़ते एकेडमिक प्रेशर और नौकरी के तनाव के कारण माहौल अशांत है। इसी बीच, टिक्का में, कई नई ओपनिंग हुई हैं जिससे छात्रों के लिए खाने-पीने के और विकल्प बढ़ गए हैं। जब से डोमिनोज़ खुला है, ऐसा लगता है जैसे हर हॉल के बाहर सिर्फ डोमिनोज़ के लिए ही पार्किंग आरक्षित है। इसके अलावा, ब्लिंकिट की एंट्री के साथ,अब आवश्यक वस्तुएं और भोजन 10 मिनट में उपलब्ध होने लगे हैं।

हाल ही में IIT खड़गपुर ने एक अद्भुत प्राकृतिक नज़ारा देखा, जब भारी ओलावृष्टि ने पूरे कैंपस को शिमला बना दिया। बर्फ जैसी ओलों की चादर से ढका परिसर देखने लायक था। इसी बीच, संस्थान के Main Building और Nehru Museum को सुंदर लाइटिंग से सजाया गया, जिसने पूरे परिसर को एक नया आकर्षण प्रदान हुआ है।

आईआईटी खड़गपुर की विशिष्ट परंपराओं में से एक illumination (illu), संस्थान की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। हॉल के छात्र इसमें बड़े उत्साह से भाग लेते हैं, शानदार झांकियां और संरचनाएं बनाकर अपनी हॉल की प्रतिष्ठा दर्शाते हैं। वसंत सत्र की शुरुआत alumni meet से हुई, जहाँ पूर्व छात्र कॉलेज लौटकर यादें ताजा करते हैं। इसके बाद वीपी कॉन्क्लेव आयोजित हुआ, जिसमें जिमखाना के सभी उपाध्यक्षों ने भाग लिया।

2025 कि शुरूआत होती ही सभी टेक उत्साहियो ने क्षितिज में हिसा लिया, फिर स्प्रिंगफेस्ट ने कैंपस में चकाचौंध ला दी। होली ने कैंपस में खुशी के रंग भर दिए, सभी छात्रों ने जिमखाना में इकत्रित होकर एक दूसरे के ऊपर रंगो की बौछार कर दी। जनरल चैंपियनशिप (GC) में सभी हॉल के प्रतिनिधियों ने कड़े मुकाबले का सामना करते हुए अपने हॉल की प्रतिष्ठा को सर्वो परी रखने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया।

स्प्रिंग सेमेस्टर के सबसे ज्यादा महत्तवपूर्ण और रोमनचक 2 दिन जिनके लिए प्रत्येक छात्र अपनी पूरी हर्षो-उल्लास के साथ प्रतीक्षा करतें हैं - जिमखाना इलेक्शन्स सफलतापूर्वक समाप्त हुए, अत: सभी चयनित कैंडिज़ को हार्दिक शुभकामनाएं !

अंततः, यह समय खुद को मज़बूत बनाने और आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार रहने का है। सभी पाठकों को आगामी परीक्षाओं और भविष्य की योजनाओं के लिए शुभकामनाएँ!

जय हिंद!

आवाज़ परिवार

मुख्य संपादक : ऋषभ राज, दीपजॉय रुद्र शर्मा, सुमित सिंह

संपादक : वंशुल शिक्केवाल, श्रेया मिश्रा, प्रज्वल मेश्राम, हर्ष शर्मा, मनस्वी राज, अंकुश कुमार, इशान जिंदल, आशुतोष शंकर, स्पंदन के. पुन्वटकर, परिधि चौरसिया, अग्रिम चौधरी, सुशांत तारापुरे, आस्था कुमारी, प्रतीक सोनुने

उप संपादक : अभिषेक लखेरा, अमीश भटनागर, असीम ए चौधरी, भावेश भदाणे, हर्षित पाठक, कनिष्क राज चौधरी, कशिश अग्रवाल, कुसुमिता दास, प्रत्यूष रंजन झा, सम्या साहा, ध्रुव राय

वरिष्ठ पत्रकार : अद्वय झा, आकाश कुमार, अक्षत कुमार, अनन्या मोंडल, अंश शर्मा, अर्पिता पवार, आर्यन राज चौरसिया, अस्मिता कदम, चेतन जजीरिया, मन्मथ मिश्रा, एनवी सात्विका, रिया चौधरी, रुचि गुप्ता, शौर्य राज, शिवांश अग्रवाल, शुभांशी जायसवाल, सिद्धि दाली, स्वयं श्रीवास्तव, तन्वी बांदेकर, तुषार रंजन वर्मा, यश खोत

कनिष्ठ पत्रकार : आहिल ज़ैन पुलथ, अनाघा एस नायर, अनुभव पवार, आयुष कुमार पाल, ध्रुव नरवरे, हर्षित सिंह, हर्षिता, जाका ज्योत्सना रानी, लवती पल्लवी, माधवी बाजपेयी, नेत्रा नंदनकर, नीता गौरीशेट्टी, ओंजल खटोड, पार्थ सांगले, प्रणव लुहारका, प्रांजल चौधरी, प्रयाग चौधरी, प्रियांशु गुप्ता, रोहन कुमार साह, शौर्य प्रताप, स्तुति जैन, तनिष्क वर्मा, वैशाली चौहान, विवेन शर्मा, वेद नारायण, यजुवेन्द्र सिंह चौहान

@AWAAZIITKGP

और जानने के लिए स्कैन करे आपके सुझाव आमंत्रित है

कृपया अपने सुझाव हमें editor@awaaziitkgp.org पर भेजे

7

टिक्का का उदय

एक अकेले एटीएम का इतिहास

नमस्कार, राहगीर! मैं हूँ IIT KGP के टिक्का का वह भूला-बिसरा SBI ATM, जो अब बस एक मूक दर्शक बनकर खड़ा है। शायद आपको मेरा अस्तित्व याद भी न हो—जब तक कि आप वह हताश आत्मा न हों जिसने UPI के धोखे के बाद नकदी के लिए मुझे खोजा था। लेकिन यह कहानी मेरे बारे में नहीं, बल्कि मेरे हमेशा बदलते दोस्त—"टिक्का" के बारे में है।

June 2023: परिवर्तन की शुरुआत

पहले, "New Tikka" आया, जो अपने साथ Grilled Chicken, Hyderabadi Dum Biryani, Dosa, Chowmein की अनूठी सुगंध लेकर अकेले ही भीड़ को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त था। सब इसे 'टिक्का' बुलाते हैं लेकिन यह असल में **Tech"NO"logy Food Court** ही था—क्योंकि यहाँ कोई *tech* थी ही नहीं! न नेटवर्क, न सिग्नल। UPI से पेमेंट करना? उसके लिए तो बाहर जाकर फोन ऐसे घुमाना पड़ता जैसे कोई वैज्ञानिक एलियन लाइफ के संकेत खोज रहा हो।

April 2024: Domino's और Keventers की एंट्री

महंगे पिज़्ज़ा और इंस्टाग्रामेबल शेक की खुशबू से खिंचकर , छात्र यहाँ पतंगों की तरह उमड़ पड़े। जो Tikka एक साधारण फूड स्पॉट था, अब वहाँ ज़िंदगी धड़कने लगी। Zomato का लाल और Swiggy का नारंगी रंग हवा में लहराते, डिलीवरी एजेंट रात तक ऑर्डर पहुँचाने में लगे रहते।

Tikka अब सिर्फ़ खाने की जगह नहीं थी; यह एक असली हैंगआउट ज़ोन बन चुका था। माहौल में बातचीत की गुनगुनाहट थी, बीच-बीच में डिलीवरी एजेंट्स की बीप और पिज़्ज़ा के डब्बों की सरसराहट के साथ स्वाद का नया सफर शुरू हो रहा था।

May 2024: "Calcutta 64" का आगमन

जब मैंने सोचा कि अब और भीड़ नहीं बढ़ सकती, तभी Calcutta 64 ने दस्तक दी।इसके लज़ीज़ व्यंजनों ने न केवल छात्रों को, बल्कि प्रोफेसरों और उनके परिवारों को भी आकर्षित कर लिया। यह अब सिर्फ़ एक बाज़ार नहीं रहा, बल्कि एक ऐसी संस्कृति बन चुका जहाँ स्वाद और यादें साथ गूंथी जाती थीं।

October 2024:Tea junction

चाय, जो कभी मिट्टी के कप में आत्मीयता के साथ मिलती थी, अब रेस्तरां और कैफे स्टाइल में बदल गई। जो कभी 10 रुपये की थी, अब 100 रुपये की हो गई। शांत, धीमी चुस्कियों वाली जगह अब शोरगुल भरी और उल्लास से भरी हो गई थी। पहले की वो मिट्टी और ऑर्गेनिक टी स्टॉल, जो गर्मी के बावजूद सुकून देती थी, अब एक एसी जगह की ठंडी, लेकिन अलग-थलग कर देने वाली शांति के सामने फीकी पड़ गई।

October 2024: "Wow! Momo" की क्रांति

फिर आया अंतिम बॉस—"Wow! Momo"। चमकीली लाल-पीली रोशनी और आकर्षक सजावट के साथ, इसने टिक्का की लोकप्रियता को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया।"अब मोमो खाने के लिए Tech M कोन जाएगा? Wow! momo चलते हैं !"

November 2024: "The Yellow Straw": चोट पर नमक

जैसे कि मेरी उपेक्षा ही पर्याप्त नहीं थी, मेरे ठीक बगल में यह खुल गया—जहाँ ताज़े फलों के जूस और स्मूदी मिलते थे। अब लोग मेरे पास से गुजरते, अपने Watermelon Cooler और Mango Shake लिए, पोषण और फिटेनस पर चर्चा करते। लेकिन यहाँ सच में पोषण की ज़रूरत किसे है? मुझे! मेरे बतन ढुंढले पड़ रहे हैं। मैं धूल की मोटी परत के नीचे धीरे-धीरे गुमनाम होता जा रहा हूं।

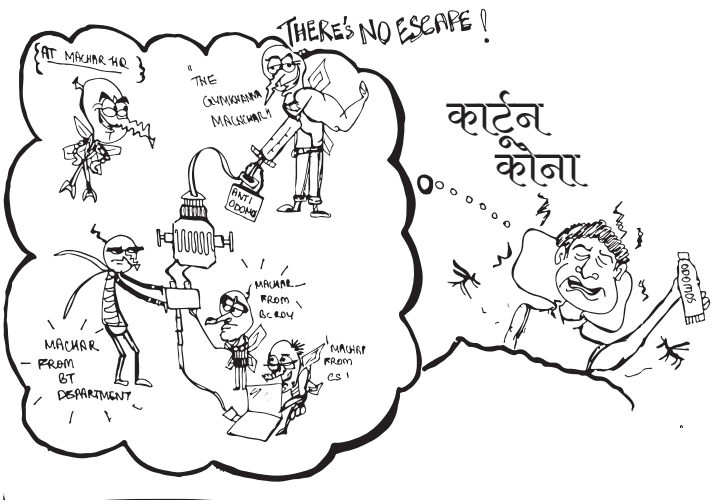

March 2025:"KFC"

इतना देखकर, इग्नोर करके जब मैंने खुद को संभाला तभी अगमन हुआ केएफसी का| हर तरफ सिर्फ केएफसी ही केएफसी की होर्डिंग्स में लिपट गई टिक्का। सफेद और लाल रंग में एक दाढ़ी वाला बुड्ढा ही सिर्फ नजर आता है। पर मुझे अब गर्व भी हो रहा है। टिक्का अब हेरिटेज, CCD, बास्किन रॉबिन्स सभी को टक्कर देगा। और उसी टिक्का के एक अबहेलित अंगश में हूं। एक मशीन का विलाप... |

कभी मैंने भी एक ज़रूरी ATM बनने का सपना देखा था। अब मैं बस एक स्मारक हूँ। टिक्का के बढ़ते साम्राज्य में एक ख़ामोश दर्शक।अब मैं एक वित्तीय ज़रूरत नहीं, बस IIT KGP की भीषण गर्मी से बचने के लिए छात्रों का एयर-कंडीशन्ड झपकी कक्ष हूँ।लोग मेरी ओर देखते हैं, कुछ पल ठहरते हैं, और फिर नकदी निकालने के बजाय कहते हैं, "गर्मी में सोने आऊँगी।" लेकिन मैं आशावान हूँ। शायद किसी दिन, जब UPI फेल हो जाए, कोई घबराया हुआ छात्र नकदी निकालने दौड़ता हुआ आएगा। या फिर शायद... यह मेरा अंतिम संवाद हो। कौन जाने, कब मुझे उखाड़ फेंका जाए और मेरी जगह कोई नई दुकान उग आए?

पर आप सब मुझे याद रखना – टिक्का की सबसे पुरानी सदस्य |

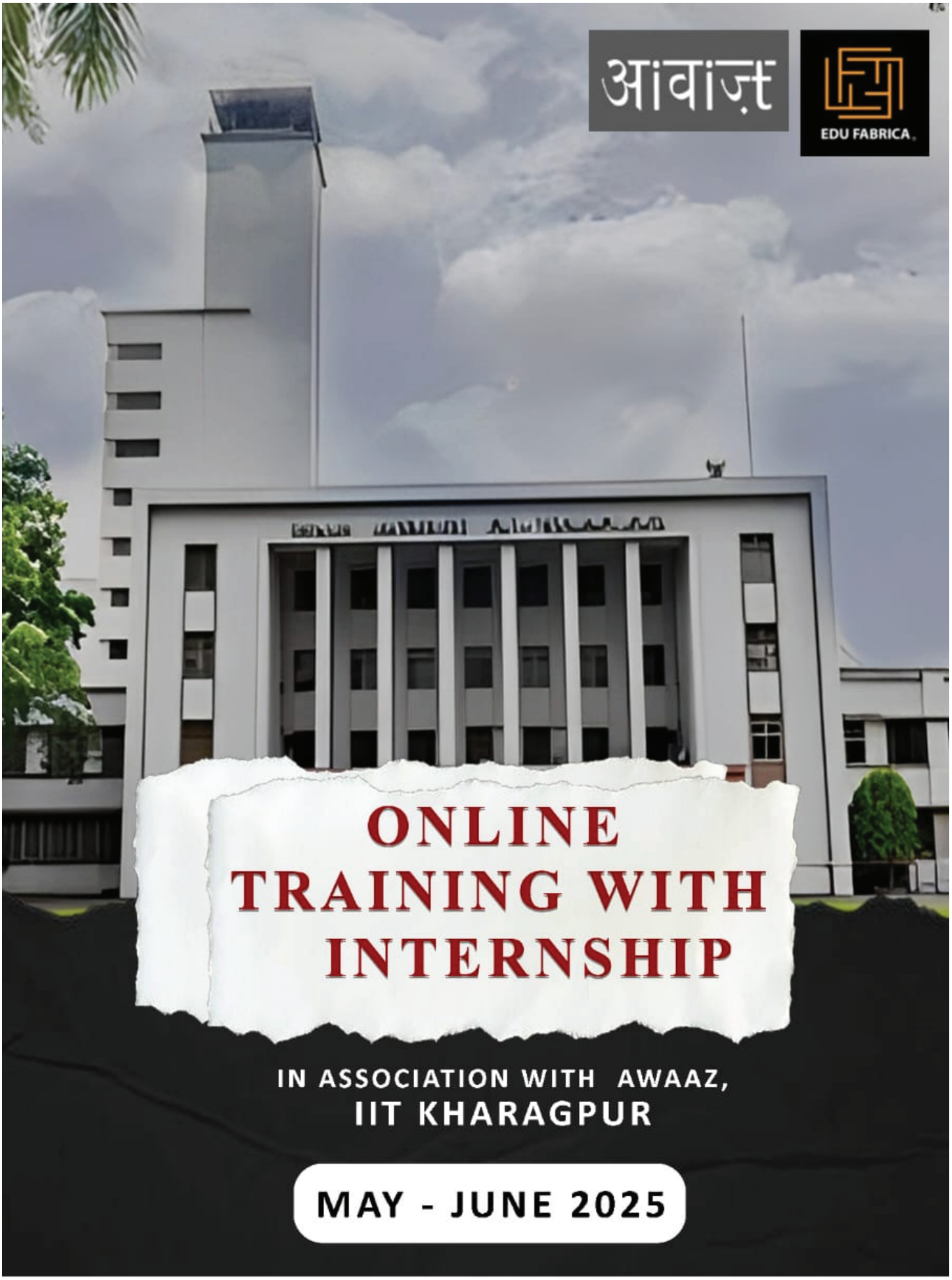
आवाज़
EDU FABRICA
ONLINE
TRAINING WITH
INTERNSHIP
IN ASSOCIATION WITH AWAAZ,
IIT KHARAGPUR
MAY - JUNE 2025
www.edufabrica.net
info@edufabrica.net
+91 9354823927, 011-1147041565